क. भजन संहिता ९ - न्याय में आशा।

- इस पापी दुनिया में अन्याय का परिणाम कष्ट होता है। वे गरीबी और बहिष्कार का जीवन जी सकते हैं।
- परमेश्वर गरीबों और संकटग्रस्त लोगों के लिए "मुसीबत के समय में एक शरण है" (भजन संहिता ९: ९)।
- सबसे बढ़कर, हमें यह आशा है कि परमेश्वर न्याय करेगा: (भजन संहिता ९:८)।
- इस दुनिया में अन्याय सहने वालों को यकीन होना चाहिए कि निष्पक्ष फैसला आने वाला है।

ख. भजन संहिता ८२ – न्याय के साथ निर्णय करना।

- वह सर्वोच्च न्यायाधीश है, और उसने ऐसे लोगों को न्यायिक कर्तव्य सौंपे हैं, जिन्हें उसके निष्पक्ष नियम का पालन करना चाहिए। उसने उन्हें "ईश्वर" कहा (पद्य १, ६)।
- यदि वे "दुष्टों के हाथ से कंगाल और निर्धन को छुड़ाते नहीं हैं" (पद्य ४), तो वे न्याय के साथ काम नहीं कर रहे हैं। इससे सामाजिक अन्याय होता है, और परमेश्वर स्पष्टीकरण मांगेगा (पद्य ७)।
- गलत न्यायिक फैसले के कारण हम पीड़ित हो सकते हैं, लेकिन हम सब न्यायाधीशों से ऊपर न्यायाधीश (पद्य ८) से अपील कर सकते हैं।

ग. भजन संहिता १०१ – निष्पक्ष अगुए।

- दाऊद ने देश के नेताओं (शाऊल और उसके सलाहकारों) के अनुचित और गंभीर दुर्व्यवहार के परिणाम को समझा।
- एक बार जब उसे ताज पहना दिया गया, तो उसने खुद को ईमानदार लोगों से घेर लिया और अभिमानियों को ठुकरा दिया जो बदनाम करते हैं, ठगते हैं, झूठ बोलते हैं और हर तरह का अधर्म करते हैं (पद्य ५,७,८)।
- अच्छे अगुओं के लिए न्याय और दया जरूरी है: "मैं किसी ओछे काम पर चित न लगाऊंगा।" (पद्य ३)

घ. भजन संहिता १४६ – एक दयालु परमेश्वर।

- भजन संहिता १४६: ६-९ हमें प्रोत्साहित करता है कि हम अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर की स्तुति करें, और उस पर विश्वास करें क्योंकि…

वह हमेशा सच्चाई रखता है	वह शोषितों के लिए न्याय करता है	वह भूखे को भोजन देता है	वह कैदियों को स्वतंत्रता देता है	वह अंधों की आंखें खोलता है
वह झुके हुए लोगों को उठाता है	वह धर्मी से प्रेम करता है	वह अजनबियों की देख-रेख करता है	वह अनाथ और विधवा की सहायता करता है	वह दुष्टों के मार्ग को उलटा कर देता है

- परमेश्वर की आराधना करने का सबसे अच्छा तरीका है कि हम अपनी क्षमता के अनुसार वैसा करें जैसा कि वह करता है।

ङ. नीतिवचन – दया और न्याय।

- १०:४ - लापरवाही मत करो, नहीं तो आप गरीब हो जाओगे
- १३:२३ - अपनी संपत्ति का बुद्धिमानी से प्रबंधन करो, चाहे आपके पास बहुत कुछ न हो
- १४:५, २५ - सच्चे गवाह बनो। ईमानदार रहो
- १४:३१ - गरीबों पर अत्याचार न करो, उन पर दया करो
- १५:१५-१६ - आपके पास जो है उस में खुश रहो
- १६:८ - अनुचित तरीके से अपने आप को लाभ न पहुँचाओ
- १६:११-१३ - हमेशा उचित लेनदेन करो
- १७:१५ - बुराई को सही न ढहराओ। धर्मी व्यक्ति की निंदा न करो
- १९:१७ - गरीबों को दो, तुम परमेश्वर को दे रहे हो
- २२:२२-२३ - गरीबों को न लूटो, न पीड़ितों पर अत्याचार करो। परमेश्वर उनके लिए वकालत करता है
- २८:१४-१६ - परमेश्वर से डरो। जबरन वसूली न करो। लोभ को अस्वीकार करो
- ३०:७-९ - परमेश्वर को न छोड़ो, चाहे आप कितने भी अमीर या गरीब हो